काकड आरती

कॉंकड आरती

– 1। जोडूनियॉं कर –

जोडूनियॉं कर चरणींॅ ठेविला माथा |
परिसावी विनंती माझी पंढरीनाथा || 1 ||

असो नसो भाव आलोंॅ तुझिया ठाया |
कृपादृष्टींॅ पाहेंॅ मजकडे सद्गुरुराया || 2 ||

अखंडित असावेंॅ ऐसे वाटतेंॅ पायींॅ |
सांडूनी संकोच ठाव थोडासा देयी || 3 ||

तुकाम्हणे देवा माझी वेडीवॉंकुडी |
नामेंॅ भवपाश हातींॅ आपुल्या तोडी || 4 ||

– 2। उठा पांडुरंगा –

उठा पांडुरंगा प्रभातसमयो पातला |
वैष्णवांचा मेळा गरुडपारींॅ दाटला || 1 ||

गरूडपारापासुनी महाद्वारापर्यंत |
सुरवरांची मांदी उभी जोडूनिया हात || 2 ||

शुकसनकादिक नारदतुंबुर भक्तांच्या कोटी |
त्रिशूल डमरू घेउनि उभा गिरिजेचा पती || 3 ||

कलीयुगीचा भक्त नामा उभा कीर्तनी |
पाठीमागेंॅ उभी डोला लावुनियॉं जनी || 4 ||

– 3। उठा उठा श्री सायिनाथ गुरु –

उठा उठा श्रीसायिनाथ गुरु चरणकमल दावा |
आधिव्याधि भवताप वारुनी तारा जडजीवा ||

गेली तुम्हाँ सोडुनियाँ भवतमरजनी विलया
परि ही अज्ञानासी तुमची भुलवि योगमाया |
शक्ति न अम्हाँ यत्किंचितही तिजला साराया
तुम्हीच तीतेँ सारुनि दावा मुख जन ताराया || 1 ||

भो सायिनाथ महाराज भवतिमिरनाशक रवी
अज्ञानी आम्ही किती तव वर्णावी थोरवी |
ती वर्णिताँ भागले बहुवदनि शेष विधि कवी
सकृप होउनि महिमा तुमचा तुम्हीच वदवावा || 2 ||

आधिव्याधि भवताप वारुनी तारा जडजीवा |
उठा उठा श्रीसायिनाथ गुरु चरण कमलदावा |
आधिव्याधि भवताप वारुनी तारा जडजीवा ||

भक्त मनीँ सद्भाव धरूनि जे तुम्हाँ अनुसरले
ध्यायास्तव ते दर्शन तुमचेँ द्वारिँ उभे ठेले |
ध्यानस्था तुम्हाँस पाहुनी मन अमुचेँ धाले
परि त्वद्वचनामृत प्राशायातेँ आतुर झाले || 3 ||

उघडूनी नेत्रकमाला दीनबंधु रमाकांता |
पाहिँ बा कृपादृष्टीँ बालका जशी माता |
रंजवी मधुरवाणी हरीँ ताप सायिनाथ || 4 ||

आम्हीच अपुले काजास्तव तुज कष्टवितो देवा |
सहन करीशी एकुनी द्यावी भेट कृष्ण धावाँ || 5 ||

उठा उठा श्री सायिनाथ गुरु चरणकमल दावा |
आधिव्याधि भवताप वारुनी तारा जडजीवा || 6 ||

– 4। दर्शन द्या –

उठा पांडुरंगा आताँ दर्शन द्या सकळाँ |
झाला अरुणोदय सरली निद्रेची वेळा || 1 ||

संत साधू मुनी अवघे झालेती गोळा |
सोडा शेजे सुखे आताँ बघुँ द्या मुखकमळा || 2 ||

रंगमंडपी महाद्वारीँ झालीसे दाटी |
मन उतावीळ रूप पहावया दृष्टी || 3 ||

राही रखुमाबाई तुम्हाँ येऊँ द्या दया |
शेजे हालवूनी जागेँ करा देवराया || 4 ||

गरूड हनुमंत उभे पाहती वाट |
स्वर्गींचे सुरवर घेउनि आले बोभाट || 5 ||

झाले मुक्तद्वार लाभ झाला रोकडा |
विष्णुदास नामा उभा घेउनि काँकडा || 6 ||

– 5। पंचारती –

घेउनियाँ पंचारती |
करूँ बाबांसी आरती || 1 ||

उठा उठा हो बांधव |
ओँवाळूँ हा रमाधवा || 2 ||

करूनिया स्थिर मन |
पाहूँ गंभीर हेँ ध्यान || 3 ||

कृष्णनाथा दत्तसायी |
जडो चित्त तुझे पायी || 4 ||

– 6। चिन्मयरूप –

काँकड आरति करीतोँ सायीनाथ देवा |
चिन्मयरूप दाखवीँ घेउनि बालक लघुसेवा ||

काम क्रोध मद मत्सर आटुनी काँकडा केला |
वैराग्याचे तूप घालुनि मी तो भिजविला |
सायीनाथ गुरुभक्ति ज्वलनेँ तो मी पेटविला |
तद्वृत्ती जाळूनी गुरुनेँ प्रकाश पाडीला |
द्वैततमा नासूनी मिळवी तत्स्वरूपीँ जीवा |
चिन्मयरूप दाखवीँ घेउनि बालक लघुसेवा || 1 ||

काँकड आरति करीतोँ सायीनाथ देवा |
चिन्मयरूप दाखवीँ घेउनि बालक लघुसेवा ||

भूखेचर व्यापूनी अवघे हृत्कमलीँ राहसी |
तोचि दत्तदेव शिरडी राहुनी पावसी |
राहूनी येथे अन्यत्रहि तू भक्ताँस्तव धावसी |
निरसुनिया संकटा दासा अनुभव दाविसी |
न कळे त्वल्लीलाही कोण्या देवा वा मानवा |
चिन्मयरूप दाखवीँ घेउनि बालक लघुसेवा || 2 ||

काँकड आरति करीतोँ सायीनाथ देवा |
चिन्मयरूप दाखवीँ घेउनि बालक लघुसेवा ||

त्वद्यशदुंदुभीने सारे अंबर हेँ कोंदलेँ |
सगुण मूर्ति पाहण्या आतुर जन शिरडी आले |
प्राशुनी त्वद्वचनामृत अमुचे देहभान हरपलेँ |
सोडूनियाँ दुरभिमान मानस त्वच्चरणीँ वाहिले |
कृपा करूनियाँ सायिमाउले दास पदरी घ्यावा |
चिन्मयरूप दाखवीँ घेउनि बालक लघुसेवा || 3 ||

काँकड आरति करीतोँ सायीनाथ देवा |
चिन्मयरूप दाखवीँ घेउनि बालक लघुसेवा ||

– 7। पंडरीनाथा –

भक्तिचिया पोटीँ बोध काँकडा ज्योती |
पंचप्राण जीवेँभावे ओवाळूँ आरती ||

ओवाळूँ आरती माझ्या पंढरीनाथा | (माझ्या सायीनाथा)
दोन्ही कर जोडोनी चरणींँ ठेविला माथा || 1 ||

काय महिमा वर्णू आताँ सांगणे किती |
कोटी ब्रह्महत्या मुख पाहताँ जाती || 2 ||

रायी रखुमाबायी उभ्या दोघी दो बाहींँ |
मयूरपिच्छ चामरेँ ढाळिति ठायींँ ठायी || 3 ||

तुका म्हणे दीप घेउनि उन्मनीत शोभा |
विटेवरी उभा दिसे लावण्यगाभा ||

ओवाळूँ आरती माझ्या पंढरीनाथा | (माझ्या सायीनाथा)
दोन्ही कर जोडोनी चरणींँ ठेविला माथा || 4 ||

– 8। उठा उठा (पद) –

उठा साधुसंत साधा आपुलालेँ हित |
जाईल जाईल हा नरदेह मग कैँचा भगवंत || 1 ||

उठोनियाँ पहाटेँ बाबा उभा असे विटे |
चरण तयांचे गोमटे अमृतदृष्टी अवलोका || 2 ||

उठा उठा हो वेगेँसींँ चला जाउँया राउळासी |
जळतील पातकांच्या राशी काँकड आरती देखिलिया || 3 ||

जागेँ करा रुक्मिणीवर देव आहे निजसुराँत |
वेगेँ लिंबलोण करा दृष्ट होईल तयासी || 4 ||

दारींँ वाजंत्री वाजती ढोल दमामे गर्जती |
होतसेँ काँकड आरती माझ्या सद्गुरु रायाँची || 5 ||

सिंहनाद शंखभेरी आनंद होतसेँ महाद्वारी |
केशवराज विटेवरी नामा चरण वंदितो || 6 ||

– भजन –

सायिनाथ गुरु माझे आई |
मजला ठाव द्यावा पायीँ ||
दत्तराज गुरु माझे आई |
मजला ठाव द्यावा पायीँ ||

श्रीसच्चिदानंद सद्गुरु सायिनाथ महाराज की जै |

– 9। श्री सायिनाथ प्रभाताष्टक –

(पृथ्वी)
प्रभातसमयीँ नभा शुभ रविप्रभा पाँकली
स्मरे गुरु सदा अशा समयिँ त्या छळे ना कली |
म्हणोनि कर जोडूनी करूँ आता गुरुप्रार्थना
समर्थ गुरु सायिनाथ पुरवी मनोवासना || 1 ||

तमा निरसि भानु हा गुरुहि नासि अज्ञानता
परंतु गुरुची करी न रविही कधीँ साम्यता |
पुन्हाँ तिमिर जन्म घे गुरुकृपेनि अज्ञान ना
समर्थ गुरु सायिनाथ पुरवी मनोवासना || 2 ||

रवि प्रगट होउनि त्वरित घालवी आलसा
तसा गुरुहि सोडवी सकल दुष्कृतीलालसा |
हरोनी अभिमानही जडवि त्वत्पदीँ भावना
समर्थ गुरु सायिनाथ पुरवी मनोवासना || 3 ||

गुरुसि उपमा दिसे विधिहरीहरांची उणी
कुठोनि मग येई ती कवनीँ या उगी पाहुणी |
तुझीच उपमा तुला बरवि शोभते सज्जना
समर्थ गुरु सायिनाथ पुरवी मनोवासना || 4 ||

समाधि उतरोनियाँ गुरु चला मशिदीकडे
त्वदीय वचनोक्ति ती मधुर वारिती साँकडेँ |
अजातरिपु सद्गुरु अखिलपातका भंजना
समर्थ गुरु सायिनाथ पुरवी मनोवासना || 5 ||

अहा सुसमयासि या गुरु उठोनियाँ बैसले
विलोकुनि पदाश्रिता त्वदिय आपदे नासिलेँ |
असा सुहितकारि या जगतिँ कोणिही अन्य ना
समर्थ गुरु सायिनाथ पुरवी मनोवासना || 6 ||

असे बहुत शाहणा परि न ज्या गुरुचि कृपा
न तत्स्वहित त्या कळे करितसे रिकाम्या गपा |
जरी गुरुपदा धरी सुधृड भक्तिनेँ तो मना
समर्थ गुरु सायिनाथ पुरवी मनोवासना || 7 ||

गुरो विनँति मी करीँ हृदयमंदिरीँ या बसा
समस्त जग हेँ गुरुस्वरूपची ठसो मानसा |
घडो सतत सत्कृती मतिहि दे जगत्पावना
समर्थ गुरु सायिनाथ पुरवी मनोवासना || 8 ||

(स्रग्धारा)
प्रेमेँ या अष्टकासी पढुनि गुरुवरा प्रार्थिती जे प्रभातीँ
त्यांचे चित्तासि देतोँ अखिल हरूनियाँ भ्रांति मी नित्य शांति |
ऐसेँ हेँ सायिनाथेँ कथुनि सुचविलेँ जेवि या बालकासी
तेँवी त्या कृष्णपायी नमुनि सविनयेँ अर्पितोँ अष्टकासी || 9 ||

श्रीसच्चिदानंद सद्गुरु सायिनाथ महाराज की जै |

– 10। सायि रहं नजर् करना –

सायि रहं नजर् करना बच्चोँका पालन् करना |
सायि रहं नजर् करना बच्चोँका पालन् करना ||

जाना तुमने जगत्पसारा सब् हि झूठ् जमाना |
जाना तुमने जगत्पसारा सब् हि झूठ् जमाना |
सायी रहं नजर् करना बच्चोँका पालन् करना |
सायी रहं नजर् करना बच्चोँका पालन् करना || 1 ||

मैँ अंधा हूँ बंदा आप् का मुझ् को चरण दिखलाना |
मैँ अंधा हूँ बंदा आप् का मुझ् को प्रभु दिखलाना |
सायी रहं नजर् करना बच्चोँका पालन् करना |
सायी रहं नजर् करना बच्चोँका पालन् करना || 2 ||

दास गनू कहे अब् क्या बोलूँ थक् गयि मेरी रसना |
दास गनू कहे अब् क्या बोलूँ थक् गयि मेरी रसना |
सायी रहं नजर् करना बच्चोँका पालन् करना |
सायी रहं नजर् करना बच्चोँका पालन् करना || 3 ||

– 11। रहं नजर् करो –

रहं नजर् करो अब् मोरे सायीँ
तुम बिन नहीँ मुझे माँ बाप् भायी ||
रहं नजर् करो ||

मैँ अंधा हूँ बंदा तुम्हारा |
मैँ अंधा हूँ बंदा तुम्हारा |
मैँ ना जानूँ मै ना जानूँ
मैँ ना जानुँ अल्ला इलाही || 1
रहं नजर् करो ||

खाली जमाना मैँने गमाया |
खाली जमाना मैँने गमाया |
साथी आखिरी (का) साथी आखिरी (का)
साथी आखिरी तू और् न कोयी || 2
रहं नजर् करो ||

अप्ने मसीद् का झाडू गनू है |
अप्ने मसीद् का झाडू गनू है |
मालिक् हमारे मालिक् हमारे
मालिक् हमारे तुं बाबा सायी || 3
रहं नजर् करो ||

– 12। जनि पद –

तुज काय देऊँ सावळ्या मी खाया तरी |
मी दुबळी बटिक नाम्याची जाण श्रीहरी ||

उच्छिष्ट तुला देणेँ ही गोष्ट ना बरी |
तूँ जगन्नाथ तुज देऊँ कशी रे भाकरी ||

नको अंत मदीय पाहूँ सख्या भगवंता | श्रीकांता |
मध्याह्नरात्र उलटोनि गेली हि आताँ | आण चित्ता ||

जा होईल तुझा रे काँकडा कीँ राउळांतरीँ |
आणतील भक्त नैवेद्यहि नानापरी ||

तुज काय देऊँ सावळ्या मी खाया तरी |
मी दुबळी बटिक नाम्याची जाण श्रीहरी ||

– 13। श्रीसद्गुरु पद –

श्रीसद्गुरु बाबा सायी
तुजवांचुनि आश्रय नाहीँ भूतली ||

मी पापी पतित धीमंदा |
तारणेँ मला गुरुनाथा झढकरी || 1 ||

तूँ शांतिक्षमेचा मेरू |
तूँ भवार्णवींचेँ ताऱूँ गुरुवरा || 2 ||

गुरुवरा मजसि पामरा,
अताँ उद्धरा,
त्वरित लवलाही,
मी बुडतो भवभय डोही उद्धरा || 3

श्रीसद्गुरु बाबा सायी
तुजवांचुनि आश्रय नाहीँ भूतली ||

श्रीसच्चिदानंद सद्गुरु सायिनाथ महाराज की जै |

राजाधिराज योगिराज परब्रह्म सायिनाथ महराज् की जै |